अपना कर्तव्य है। उसकी नीतियां परिणामकारी होती हैं। परन्तु उस सरकार को बनाने वाला तो समाज ही होता है। इसलिए विकास की ऐसी योजना बननी चाहिए, जिसमें समाज विकसित हो सके।

हम सृष्टि का उपभोग नहीं करते, बल्कि आवश्यकता अनुसार उसका उपयोग करते हैं। इससे जो शक्ति मिलती है, उसे सृष्टि को समृद्धिशाली बनाने में लगाते हैं। ये विकास का तरीका हमें जंगलों और कृषि से मिला है। इस विकास से पर्यावरण में खराबी नहीं आती, ऊर्जा नष्ट नहीं होती। आज आधुनिक युग में उसी तत्व को नए रूप में खड़ा करने की जरूरत है। इसका उदाहरण माननीय नानाजी ने चित्रकूट में खड़ा किया है। हम देखते हैं कि उस